प्रश्न 1.

'आदमी भी क्या अनोखा जीव होता है', चाँद क्यों ऐसा कह रहा है?

उत्तर:

आदमी स्वयं उलझनें बनाकर अपने आप को उसमें फँस देता है। फिर, बैचेन होकर वह न जगता है, न सोता है।

प्रश्न 2.

आदमी का स्वप्न जल का बुलबुला है- अपना मत प्रकट करे।

उत्तर:

कवि रामधारी सिंह दिनकर के अभिप्राय में आदमी का स्वप्न जल का बुलबुला है। वह आज बनता है और कल फूट जाता है। कभी कभी यह बात ठीक है। लेकिन सदा ऐसा नहीं होता। स्वप्न को आदमी यथार्थ में ले आकर महान कार्य करता है। हमें व्यर्थ में स्वप्न न देखना चाहिए। यथार्थ में फलनेवाले स्वप्न देखना चाहिए। अब्दुल कलाम जी ने कहा है: 'महान सपने देखनेवालों के महान सपने हमेशा पूरे होते हैं।

प्रश्न 3.

कवि के बदले रागिनी क्यों बोल उठी?

उत्तर:

स्पप्न को ठीक रूप से समझने में असमर्थ होकर कवि मौन रहा। इसलिए रोगिनी बोल उठी।

प्रश्न 4.

मनु-पुत्र की कल्पना कैसी है?

उत्तर:

धारवाली।

प्रश्न 5.

स्वर्ग का सम्राट कौन हो सकता है?

उत्तर:

व्यक्ति, समाज, राष्ट्र एवं विश्व की सकारात्मक प्रगति के विरुद्ध खड़ी होनेवाली समस्त नकारात्मक शक्तियों को स्वर्ग के सम्राट के रूप में प्रतीकात्मक रीति से कविता में प्रस्तुत किया गया है।

प्रश्न 6.

समान भाववाली पंक्ति चुनकर लिखें।

a. स्वप्नों को आग में गलाकर लोहा बनाता है।

b. मनु पुत्र के कल्पना भरे सपने तीखे होते हैं।

c. चाँद इतना पुराना है कि उसने मनु का जन्म और मरण देखा है।

d. आदमी स्वयं उलझनें बनाकर चैन खो बैठता है।

उत्तर:

a. आग में उसको गला लोहा बनाती हूँ।

b. जिसकी कल्पना की जीभ में भी धार होती है।

c. मैं कितना पूराना हूँ?, मैं चुका हूँ देख मनु को जनमते-मरते।

d. उलझनें अपनी बनाकर आप ही फँसता है और फिर वैचैन हो जगता न सोता है।

प्रश्न 7.

विश्लेषणात्मक टिप्पणी लिखें।

मनु नहीं मनु-पुत्र है यह सामने, जिसकी,
कल्पना की जीभ में भी धार होती है,
बाण ही होते विचारों के नहीं केवल,
स्वप्न के भी हाथ में तलवार होती है।

प्रश्न 8.

विश्लेषणात्मक टिप्पणी की परख, मेरी ओर से

- पंक्तियों का विश्लेषण किया है।
- अपना दृष्टिकोण व्यक्त किया है।
- पंक्तियों के विचार से अपने विचार की तुलना की है।

प्रश्न 9.

कविता की आस्वादन-टिप्पणी लिखें।

उत्तर:

प्रस्तुत कवितांश 'चाँद और कवि' कविता से अवतरित है। इसके कवि हैं सुप्रसिद्ध देशभक्त कवि रामधारी सिंह दिनकर। 'चाँद और कवि' दिनकरजी का प्रगतिशील कविता है। कवि से चाँद कहता है कि मनुष्य विचित्र जीव है। यह इसलिए है कि आदमी जान-बूझकर उलझनें उत्पन्न करता है, उसीमें फंस रहता है, फिर बेचैन होकर उसको नींद तक दुस्सह होता है ।चाँद सृष्टि के पुराने पदार्थ होने पर अहं करता है। चाँद कहता है कि उसने आदि मानव मनु के जन्म और मरण देखा है। चाँदनी में पागल की तरह बैठ स्वप्नों को यथार्थ में परिवर्तन करने का परिश्रम करनेवाले कवि को चाँद तुच्छ मानता है। हमारे समाज में कई प्रकार की रूढ़ियाँ हैं। वे सदा परिवर्तन के विरुद्ध खड़ी रहती हैं। कवितांश में चाँद रूढ़ियों का प्रतिनिधि है। परिवर्तन एक क्षण में नहीं होता। उसके पीछे दशकों की कल्पनाएँ और स्वप्न समाहित हैं। परिवर्तन केलिए कल्पना करनेवालों और स्वप्न देखनेवालों का प्रतिनिधि हैं कवि। कवितांश की भाषा सरल है। पंक्तियाँ प्रतीकात्मक और बिम्ब-प्रधान हैं। कवितांश का भाव हममें लाने में कवि सफल हो गए हैं। कवि ने यहाँ मानव की क्रियात्मक प्रतिभाशक्ति को महत्व दिया है।